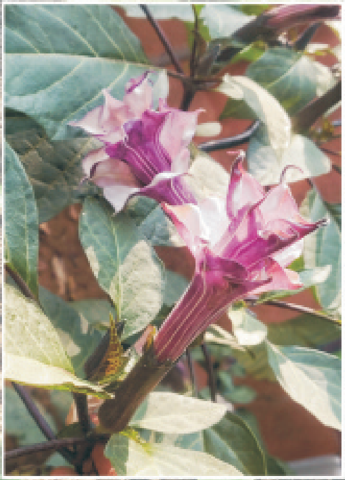
अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : ४७ अंक : १२ मार्गशीर्ष-पौष वि.सं.- २०७८ दिसम्बर २०२१ मूल्य-१८ रुपये पृष्ठ -२८ RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X





समिति का औषधि उद्यान



पिछले कुछ ही महीनों के प्रयास से समिति के उजड़े परिसर का हम काया-कल्प कर सके हैं। सारा घास-फूस और झाड़-झंकाड़ उखाड़ कर जमीन को साफ कर कई वनस्पितियों के पौधे यहां रोप दिये गये हैं। झाड़-झंकाड़ को उखाड़ते हुए भी हमने उपयोगी वनस्पिति जो स्वत: उगी हुई थी, उसको नहीं उखाड़ा। **शंख-पुष्पि** के पौधों को भी बचा लिया और **भूमिआंवला** एवं **पुनर्नवा** की वनौषधियों के पौधों को भी बचा लिया।

नये पौधे लगा दिये गये। **आंवले** के पेड़ तो पहले से ही थे और फल भी दे रहे थे। इस बार भी उनकी फसल अच्छी हुई है। समिति परिसर में लगे **चीकू** के पेड़ फल नहीं दे रहे थे, मगर हमारी दोस्ताना परवरिश के कारण इस बार चीकू के पेड़ों ने भी अच्छे फल दिये।

जो नये पौधे हमने रोपे वे भी सभी के सभी पल्लवित पुष्पित होने लगे गये हैं। **चित्रक** नाम की वनौषधि के पौधे पर खूब सारे फूल आ रहे हैं। **काला धतूरा** भी फल दे रहा है। **कालमेघ** जो कि बुखार उतारने की जड़ी-बूटी है वह भी जोश

शेष कवर तीन पर...



ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पिछानै।
बाहर जाता भीतर आनै।।
पाँचौ बस करि झूँठ न भाखै।
दया-जनेऊ हिरदे राखै।।
आतम-बिद्या पढ़ै पढ़ावै।
परमातम का ध्यान लगावै।।
काम क्रोध मद लोभ न होई।
चरनदास कहैं ब्राह्मन सोई।।

- चरणदास जी

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : ४७ अंक : १२ मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०७८ दिसम्बर, २०२१

क्र म

अपील

समिति के सभी सदस्यों, दूर-दराज के मित्रों एवं भारत के विभिन्न राज्यों में फैले सुधी पाठकों से निवेदन है कि समिति के प्रकाशन की निरंतरता बनाये रखने के लिए अपनी सहयोग राशि पूरी उदारता के साथ भिजवाने का अनुग्रह करें। आज किसी भी पत्रिका का प्रकाशन बहुत मुश्किल काम है मगर समिति अपने पूर्ण सेवा भाव के साथ अनौपचारिका को पिछले ४७ वर्षों से निरंतर निकाल रही है। सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं कि अभी हाल ही में कादम्बिनी भी बंद हो गई है जो हिन्दुस्तान टाइम्स का प्रकाशन था। ऐसी स्थिति में हम कटिबद्ध हैं कि अनौपचारिका निरंतर निकलती रहे। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext.Jhalana Jaipur

I.F.S.C.Code : BARB0EXTNEH
(fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct,No. 9815010002077

संस्थापक संपादक एवं संरक्षक :
रमेश थानवी
कार्यकारी संपादक :
प्रेम गुप्ता
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-३०२००४
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

सद्‌भावना सहयोग :
व्यक्तिगत ३५०/- रुपये
संस्थागत वार्षिक
शुल्क ५००/- रुपये
मैत्री समुदाय ३०००/- रुपये

शिक्षा में मानवाधिकार...

मित्रो,
इस महीने में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है। १० दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानव अधिकारों की पूरी दुनिया में घोषणा की थी। इसमें नागरिकों के बुनियादी शिक्षा के अधिकार, स्वास्थ्य के अधिकार और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों का उल्लेख किया गया है। देश में हर नागरिक को सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए ताकि पूरी दुनिया में देश का हर नागरिक स्वतंत्र हो, उसे न्याय एवं शांति मिल सके। देश के हर नागरिक को शिक्षा पाने का अधिकार हो। देश का हर बालक स्वस्थ हो, भय मुक्त हो। हर बालक का, नवयुवकों का, देश के हर नागरिक का सांस्कृतिक उन्नयन हो सके। ऐसी शिक्षा हो जो जन-जन को शिक्षित कर सके। हमारे देश में आरोग्य रहने का अधिकार हो। हर नागरिक की गरिमा और मानव अधिकारों की रक्षा हो सके। देश का हर नागरिक प्रतिष्ठित हो सके।

हमारा देश लोकतांत्रिक प्रजातांत्रिक देश कहलाता है जिसमें हर बालक को शिक्षा का अधिकार, स्वस्थ रहने का अधिकार यहां तक कि सभी बुनियादी अधिकार प्राप्त हैं। देश के संविधान में इन की विस्तृत व्याख्या भी की गयी है। दरअसल देखने में यह आया है कि जब भी इन संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग जनता ने किया है, तभी उसे अमानवीय, असामाजिक दंड सामना करना पड़ा है।

मानवधिकार हमारी चेतना का विस्तार है। और हर नागरिक की स्वतंत्रता लोकतंत्र के अस्तित्व की एक बुनियादी जरूरत है। मौजूदा हालात में अपनी बात कहने की स्वतंत्रता या विरोध करने का, असहमति जताने के संवैधानिक अधिकार के प्रयोग से ही जीवन खतरे में पड़ रहा है।

आसिफ इकबाल तन्हा, नताशा अग्रवाल और देवांगना अनीता जैसे युवाओं को आतंकवादी ठहरा कर उन्हें एक वर्ष तक जेल में रखा गया। ऐसे निर्णयों ने हमारे लोकतंत्र को खतरे में डाल दिया है। यह हमारी गंभीर चिंता का विषय है। ऐसे हालात में लोकतंत्र कैसे सुरक्षित रह सकता है?

एक बड़ा और ज्वलंत उदाहरण किसान आंदोलन का है। कृषि कानून का विरोध करने के उद्देश्य से यह आंदोलन एक वर्ष से अधिक समय तक चला । केंद्र सरकार ने जिस कृषि कानून की घोषणा की थी, वह लोकतंत्र विरोधी अनैतिक और असंवैधानिक था। लेकिन किसानों का संकल्प था कि जब तक तीन काले कृषि कानून वापस नहीं होंगे, तब तक हम घर वापस नहीं लौटेंगे। किसान दिल्ली आना चाहते थे लेकिन उन्हें उनकी सीमा पर ही रोक दिया गया। वहां लोहे के बार लगा दिये गये। कड़कड़ाती सर्दी में उन

पर पानी डाला गया। यहां तक कि उन्हें देशद्रोही आतंकवादी तब कहा गया। उन्हें बदनाम करने की कोई कसर नहीं छोड़ी गयी। चिंता का विषय है कि देश के हर नागरिक के मानव अधिकार की रक्षा और गरिमा को बनाये रखने के बजाय, उनसे बातचीत कर समाधान निकालने के बजाय आंदोलन को कमजोर बनाने का प्रयास किया गया।

इस आंदोलन ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि आखिर झूठ और पाखंड के आगे जीत सत्य की ही होती है। यह लोकतंत्र की जीत है। संविधान की जीत है। हमारे सामने बहुत सारे सवाल हैं कि लोकतांत्रिक सरकार को निर्णय लेने में इतनी देरी कैसे हुई? जो निर्णय लिया गया है कहीं वह किसी राजनीतिक हितों का ही तो परिणाम नहीं है? इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति के अधिकार को लोकतंत्र की आत्मा माना जाना चाहिए था। क्या चुप्पी साधे रखने से हमारे अधिकारों की सुरक्षा हो पायेगी। और अगर बोलने की सजा मौत है तो लोकतंत्र में विश्वास रखना ही सबसे बड़ा अविश्वास है। सवाल पूछने का अधिकार ही लोकतंत्र को तानाशाही होने से बचाता है। वक्त बेवक्त सवाल पूछने का हक सत्ता को जनता के प्रति जवाबदेही बनाये रखता है। उसे निरंकुश होने से रोक सकता है।

आज के हालात में सत्ता की मनमानी दिनोंदिन बढ़ रही है। ऐसे में चुप्पी जिंदा इंसानों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन रही है। आज कानून और शक्तियों का खुलेआम दुरुपयोग हो रहा है। क्या यह लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर नहीं करेगा। जब तक सही बात का विरोध लोकतंत्र की अखंडता, संप्रभुता फैलाने के उद्देश्य से नहीं किया जाये तब तक वह आतंकवादी नहीं कहा जा सकता।

जब शिक्षा किसी के जीवन को बचाने के काम ही न आये तो ऐसी शिक्षा पाने का फायदा क्या? जब हम किसी के काम ही ना पाये तो ऐसी शिक्षा का क्या? शिक्षित होने का अर्थ तो यह नहीं है। शिक्षित होने का अर्थ खुद के लिए जीना नहीं है। क्या हमें न्याय अन्याय ईर्ष्या करना सिखाती है। क्या शिक्षा का अधिकार केवल एक ढकोसला है?

गंभीर चिंता का विषय है कि मानव अधिकारों की शिक्षा कैसी हो? ऐसी शिक्षा जो जन जन को प्रशिक्षित कर सके। ऐसी शिक्षा हो जो मानव अधिकारों को सुरक्षित रख सके। ऐसी शिक्षा हो जहां सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए असंवैधानिक तरीकों का सहारा लेने की जरूरत न हो। ऐसी शिक्षा नव युवकों के मन में आक्रोश के बीज डालने का काम न करे। बालकों के बालमन में अराजकता के बीज ही ना बो पाए। उनका बालमन सविनय तरीकों का सहारा ले। सविनय अवज्ञा आंदोलन एक उपाय काम में ना लेने पड़े।



शिक्षा का काम साथ चलना सिखाना है। शिक्षा शास्त्र के रूप में काम आनी चाहिए शस्त्र के रूप में इसका उपयोग करना कहां तक उचित है?और शास्त्र का उपयोग कैसे किया जाये। यह उसका उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है। इसका दुरुपयोग करता है तो इसमें शास्त्र और शस्त्र का कोई दोष नहीं है।❑ **प्रेम गुप्ता**

मृत्यु एक आसान मंजिल

❑



प्रमोद

❑

प्रमोद जी नौजवान शिक्षाविद् हैं। पूरे भारत में शिक्षा का काम करने वाले नौजवान दोस्तों का प्रशिक्षण भी करते रहते हैं और शिक्षा के कई सन्मार्ग तलाशते रहते हैं। वे हृदय से भी कवि हैं और कलम से भी कवि हैं। बालकों के लिए कविता भी लिखते हैं और साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं। बाल गीतों की उनकी एक किताब हाल ही प्रकाशित हुई है नाम है –पानी उतरा टीन पर। इस अनूठी पुस्तक का चित्रांकन किया है–नीलेश गहलोत ने और इसका प्रकाशन किया है–जुगनू प्रकाशन, नयी दिल्ली ने। यहां प्रस्तुत लेख शिक्षा–विमर्श के संपादकीय के रूप में छपा था उसे यहां नये शीर्षक के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। ❑ सं.

हमारे देश में पिछले वर्षों में छात्र–छात्राओं द्वारा आत्महत्या करने के आंकड़ों में चौंकाने वाली वृद्धि हुई है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के हवाले से एक समाचार वेबसाइट की रिपोर्ट बताती है कि २०१५ के आंकड़ों के हिसाब से भारत में हर घंटे में एक छात्र–छात्रा द्वारा आत्महत्या की जा रही है। प्रति घंटे की दर से दिया गया यह आंकड़ा एक ऐसी छवि निर्मित करता है जैसे हम इस दर से आत्महत्याओं का उत्पादन कर रहे हैं। यही रिपोर्ट आगे बताती है कि लांसेट (एक सुप्रतिष्ठित मेडीकल जर्नल) की २०१२ की रिपोर्ट के हिसाब से १५ से २९ वर्ष आयु वर्ग के युवाओं द्वारा की जाने वाली आत्महत्या की सबसे ऊंची दर भारत में है। लगता है हमारे समाज का खेत आत्महत्या की फसल से लहलहा उठा है। हमने अपने युवाओं को तनाव की भट्टी में झोंक दिया है। यह एक चेतावनी है जिसे अब और अनसुना किया जाना घातक होगा। हम समझने की कोशिश करते हैं कि इसकी जड़ें कहां–कहां हैं?

कैरियर की गलत धारणा

हमने कैरियर यानी सुनिश्चित भविष्य की बहुत सीमित धारणा पिछले तीन दशकों में (नब्बे के दशक की शुरुआत से जब से हमने उदारवादी नीतियों का दामन थामा है) गढ़ी हैं। इस धारणा में मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैंनेजमेंट, सीए जैसे कुछ क्षेत्रों को ही सुनिश्चित भविष्य की श्रेणी में मान लिया गया है। हमारी यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में समाज विज्ञान, साहित्य, दर्शन जैसे विभाग खाली पड़े हैं या बंद हो चुके हैं। इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर विश्वविद्यालयों या स्कूलों में बतौर शिक्षक, शोधार्थी हो सकते हैं अथवा बतौर समीक्षक, लेखक, पत्रकार, चिंतक हो सकते हैं किन्तु हम देख सकते हैं कि आज के युवाओं में से कोई भी शिक्षक बनने की चाह नहीं रखता न ही उनकी सामाजिक शोध, चिंतन के क्षेत्र में जाने में रुचि है। इसकी सीधी वजह है कि इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बेहद कम हो चुके हैं। लेकिन एक समाज के तौर पर हमें सामाजिक शोधों, नये साहित्य व दर्शन के नये विचारों की जरूरत तो हमेशा रहने वाली है। चूंकि हमने रोजगार सृजन को पूरी तरह बाजार के हवाले कर दिया है, ऐसे में इन जरूरी किन्तु गैर लाभकारी क्षेत्रों में निजी क्षेत्र पूंजी निवेश क्यों करने लगा। इन विषयों की इसके बाद एक जो उपयोगिता

बची रह जाती है वह है सिविल सेवाओं के इम्तिहानों के लिए विषय के तौर पर इनका चुनाव किया जाना। ऐसे में उद्देश्य गहराई से इनका अध्ययन करना व शोध में आगे बढ़ना नहीं रहा जाता बल्कि किसी कोचिंग सेंटर के नोट्स का रट्टा लगाना और ज्यादा से ज्यादा अंक लाकर मेरिट में अपना स्थान सुनिश्चित करना भर रह जाता है।

हमने हुनर या कौशलों को तो शिक्षा से स्वतंत्रता की अलस भोर में ही अलग कर दिया था। महात्मा गांधी ने काम व श्रम को शिक्षा में स्थान देने के लिए बुनियादी शिक्षा का पौधा रोपा था। लेकिन हमारे जातिवादी मन को वह प्रयास रास नहीं आया क्योंकि हमारे नीति निर्माता व शासक वर्ग में बड़ा तबका ऊंची जातियों से रहा है और उसे अपने बच्चों का हाथ से काम करना रास नहीं आता। फिर काम व श्रम को महत्व देने का आशय जातीय पायदान में अपेक्षाकृत निचले स्तर पर मौजूद उन जातियों के ज्ञान की वैधता को भी तो स्वीकारना हुआ जिन्हें हम आज तक शूद्र और गंवार कहने के आदी रहते आये हैं। एक समाज के तौर अपनी सोच में इस विभाजित मानसिकता की ही परिणति हम आज स्कूली स्तर पर कौशल विकास के लिए अलग कोर्सों की वकालत करने के संदर्भ में देख सकते हैं जहां कौशलों को शिक्षा का हिस्सा नहीं मान कर उन्हें दोयम दर्जे पर रखते हुए निजी क्षेत्र के लिए 'स्किल्ड लेबर' उत्पादित करने के एक उपकरण के तौर पर इस्तेमाल करना चाहते हैं। इसे हम शिक्षा की पुनरुत्पादक की भूमिका के संदर्भ में देख सकते हैं कि कैसे ब्राह्मणवादी मानसिकता से ग्रसित हमारे नीति निर्माताओं ने जाति को दूसरे रास्ते से बरकरार करने का जुगाड़ कर लिया है क्योंकि इन कौशल विकास कार्यक्रमों में ज्यादातर किशोर-किशोरी उन्हीं
जातियों से आने वाले हैं जो पहले से श्रम व हाथ के कामों से जुड़ी थीं और आर्थिक पायदान में निचले क्रम पर मौजूद हैं। इसका सीधा अर्थ है कि इनके लिए उच्च शिक्षा के रास्ते इतने आसान नहीं रह जाने वाले हैं क्योंकि इनके अंकों को आगे यूनिवर्सिटी या कॉलेज में दाखिले के लिए किये जाने वाले आवेदन के वक्त गिना नहीं जायेगा। एक बड़ी वजह इसकी यह भी है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था उन जातियों के जीवन में सामाजिक गतिशीलता की भूमिका निभाने में अभी तक नाकाम रही है और इसलिए वे अभी भी आर्थिक वर्गों में सबसे निचले पायदान पर मौजूद हैं। भारत में जातियों व आर्थिक वर्ग के बीच का संबंध जग जाहिर व सामाजिक अध्ययनों से पुष्ट हो चुका है।

यहां नीचे दी गयी सारणी भी इसकी पुष्टि करती है। ✻

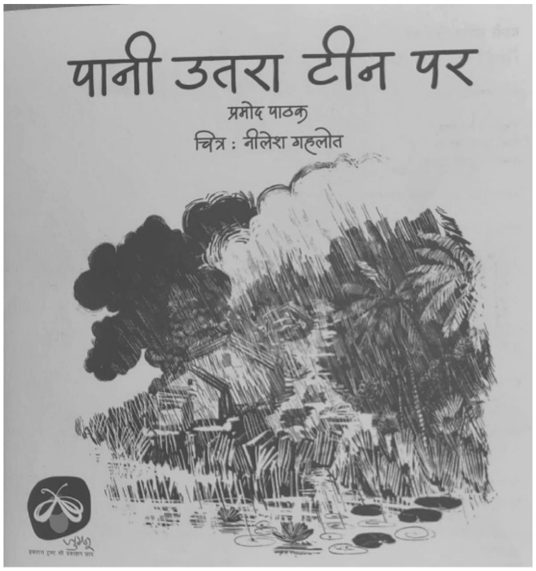
'यहां इस बात का पता नहीं चलता कि किस समूह के कितने विद्यार्थी अच्छे या बुरे स्कूलों और कॉलेजों में जा रहे हैं। बहुत सारे लोगों के अनुमान यही संकेत देते हैं कि यह संतुलन भी सामान्य जातियों के पक्ष में ही है। सबसे बढ़िया स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने तथा विदेश जाने वाले विद्यार्थियों में सबसे ज्यादा संख्या सामान्य जातियों के विद्यार्थियों की ही होती है।'' (पृष्ठ १३, जातिवाद और शिक्षा, अमन मदान, शिक्षा विमर्श, मई-जून, २०१६)

मनचाही जगह एडमिशन न मिलना।

हम अपने पास-पड़ोस के मध्यम व निम्न-मध्यम वर्ग में १५-

✻ सारिणी १: विभिन्न आयु वर्गों में जाति-वार दाखिलों का प्रतिशत (एनएसएस ६८ वां चक्र, २०११-२०१२)

आयु वर्ग	अजजा	अजा	ओबीसी	सामान्य	कुल
६-१४ वर्ष आयु वर्ग में स्कूल में दाखिले	९१.२	९१.९	९२.७	९४.८	९२.९
१५-१७ वर्ष आयु वर्ग में स्कूल में दाखिले	६७.६	६७.४	७४.६	८०.१	७४.२
१८-२१ वर्ष आयु वर्ग में उच्च शिक्षा में दाखिले	१४.२	१८.८	२५.२	३६.६	२६.२



१७ साल के किशोरों की दिनचर्या देखें तो अनुभवों से यह महसूस कर सकते हैं कि हम किस पसोपेश से गुजर रहे हैं। इस उम्र में उनका ज्यादातर समय ट्यूशन की भागदौड़ में जा रहा होता है। वे किताबों में सिर खपाये बैठे होते हैं। होली और वसंत के मौसम के समय परीक्षा की तैयारी में रातें काली कर रहे होते हैं। अपने लिए बेहतर से बेहतर अंक जुगाड़ने की कोशिश में लगे होते हैं। उनके जीवन को देखो तो उम्र के 'स्वीट सिक्सटीन' पड़ाव से स्वीट कब का गायब हो चुका होता है खुद उन्हें नहीं पता होता है। इस सबके बावजूद जब ९७-९८ प्रतिशत अंक आने के बाद भी किसी बढ़िया कही जाने वाली मनचाही यूनिवर्सिटी या कॉलेज में दाखिला नहीं मिलता और मिल भी जाये तो मनचाहे विषयों के चुनाव के साथ नहीं मिलता तब लगता है कि अर्जित यह सफलता कितनी विफलता के बोध से भरी ।

जब हम कैरियर के दायरे को इतना सीमित कर देते हैं तो महत्वाकांक्षाओं का दायरा भी उसके दबाव में सिकुड़ जाता है। अब हर दूसरे युवा की महत्वाकांक्षा उस छोटे से दायरे में ही अपनी जगह बनाने की रहती है। और चूंकि हमने अपनी नीतियों के चलते शिक्षा को बाजार के हवाले कर दिया है और बाजार अपनी शर्तों पर चलता है। वह कभी भी इस छोटे से दायरे में पूर्ति को मांगों के नजदीक भी नहीं फटकने देता क्योंकि इसी से उसका अस्तित्व बचा रहता है। यहां सदा ऊंची मांग बनी रहेगी चाहे वह युवाओं की जान की कीमत पर ही क्यों न टिकी हो। इसलिए इन क्षेत्रों में अच्छे कहे जाने वाले शैक्षिक संस्थानों की कमी सदा बनी रहेगी।

कर्ज में डूब कर कैरियर की नैया पर सवार हो जाना

हमने नब्बे के दशक में उदारीकरण की नीतियों को अपनाना शुरू कर दिया था। तब से अब तक हम इस रास्ते पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं और उस जगह पहुंच चुके हैं जहां अब शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों को शैक्षिक कर्ज व स्वास्थ्य बीमा के भरोसे छोड़ दिया है। कर्ज लेकर पढ़ाई करना आज के युवा की मजबूरी बनती जा रही है क्योंकि सरकार ने उच्च शिक्षा से हाथ लगभग खींच लिया है। उसे १२वीं तक आते-आते अपना तथाकथित कैरियर बनाने व आगे की पढ़ाई के लिए किसी न किसी तरह का कर्ज लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि शिक्षा के तेजी से बढ़ते निजीकरण के चलते आगे की फीस इतनी अधिक है कि माता-पिता अपनी तनख्वाह या आय से उसकी भरपाई नहीं कर सकते हैं। यह कर्ज अनचाहे ही उस उम्र में युवाओं के कंधे पर अपनी जकड़ बढ़ा देता है। जिस उम्र में उन्हें अपनी खुद की पहचान करनी चाहिए थी, खुद को खोजना चाहिए था, अपनी पसंद-नापसंद के आधार पर अपने कैरियर को चुनने का अवकाश चाहिए था। यह सब खोजने, जानने में साहित्य, सिनेमा, कला और अंकुआता प्रेम आपको मदद करता है। मगर अफसोस कि हमने अपने युवाओं से वक्त छीन लिया है।

और यह तो वह मंजिल

नहीं कैरियर की भागदौड़ में निकला समय वापस नहीं आता। युवा जब कैरियर में 'सैटल' होने की ओर बढ़ रहे होते हैं, तब उनमें से कई को यह महसूस होने लगता है कि यह तो वह कैरियर नहीं है जिसके लिए वह बने हैं। लेकिन तब तक वे इतने कर्ज में डूब चुके होते हैं कि वापसी का कोई रास्ता नहीं बचा होता है और ऐसे में उन्हें जीवन से ज्यादा सुलभ मृत्यु लगने लगती है। हताशा और उससे पैदा हुआ असफलता का बोध इतना गहरा हो जाता है कि उसके सामने **मृत्यु एक आसान मंजिल** लगने लगती है। ❑

मोबाईल नं. -०९४६०९८६२८९



प्रेमपाल शर्मा

❑

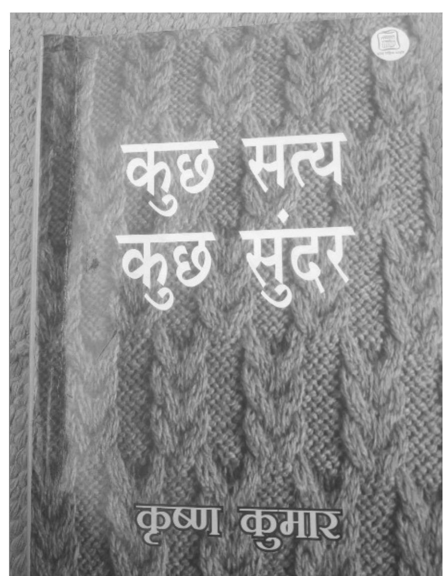
एक अरसे पहले प्रेमपाल जी ने शिक्षा–विमर्श के एक अंक में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् कृष्णकुमार की पुस्तक 'कुछ सत्य कुछ सुंदर' की विस्तृत समीक्षा की थी।
उसी समीक्षा को हम जस–का–तस एक आलेख के रूप में छाप रहे हैं क्योंकि हमें यह लगा कि कृष्णकुमार जी के शैक्षिक चिन्तन एवं सृजन पर यह एक विवेचनात्मक टिप्पणी है। इसे निबंध ही कहा जाना चाहिए। शिक्षा में ऐसे सुचिंतित एवं प्रासंगिक और साथ ही सामयिक निबंधों का बहुत अभाव है। इसमें कृष्णकुमार जी की दूसरी कई किताबों का जिक्र है। पाठक लाभान्वित होंगे ऐसा विश्वास है। ❑ सं.

शिक्षा का स्वप्न

❑

पंजाबी के मशहूर कवि अवतार सिंह पाश की कविता 'सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना' शायद उत्तर भारत में पिछले तीन–चार दशक की सबसे प्रिय कविता रही होगी। कृष्ण कुमार के शिक्षा विषयक छोटे–छोटे निबंधों को पढ़ते हुए बरबस मुझे उन सपनों की याद आयी जो कृष्ण कुमार के यहां मुकम्मिल जिंदा हैं और बार–बार हिन्दी–अंग्रेजी के पृष्ठों पर कई–कई रूपों में फड़फड़ाते रहते हैं। अपनी भाषा में शिक्षा, नवाचार, समान शिक्षा ऐसे ही सपनों का नाम है जिन्हें देश का अमीरी की तरफ बढ़ता मध्यवर्ग भूलता जा रहा है। आर्थिक असमानताएं ऐसे सपनों की और बड़ी दुश्मन हैं। अफसोस यही कि जिस शिक्षा के हथियार से इस मध्यवर्ग के दिमाग के जाले साफ किये जा सकते थे, वह हथियार सिर्फ खुट्टल ही नहीं हुआ है, बंदर के हाथ में उस्तरे की कहानी में वर्णित अपनी ही नाक काटने पर आमादा है।

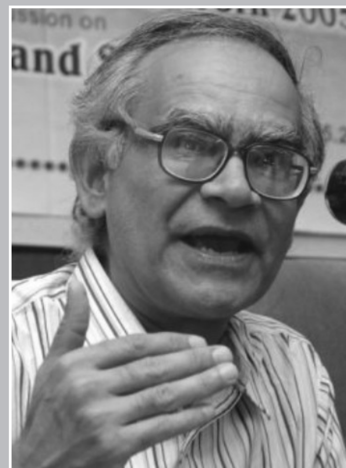
'नींद उड़ाने वाला सपना' निबंध में कृष्ण कुमार का दर्द साफ महसूस किया जा सकता है। पाठकों को याद दिला दें कि अगस्त २०१५ में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने शिक्षा के संदर्भ में उम्मीद से परे एक साहसिक निर्णय दिया था। उद्देश्य था शिक्षा की बरबादी को बचाने के लिए सरकारी स्कूलों को ठीक करना। और ये तभी ठीक होंगे जब सभी सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों के बच्चे अनिवार्य रूप से इन्हीं स्कूलों में पढ़ें। सरकारी कोष से किसी भी रूप में पगार लेने वाले सभी कर्मचारी इसमें शमिल थे। उत्तर प्रदेश में उस वक्त समाजवादी पार्टी की अखिलेश यादव की सरकार थी। सरकार अगले डेढ़ वर्ष तक सत्ता में भी रही लेकिन दूर–दूर तक इस आदेश के पालन की चर्चा भी दिल्ली से लेकर इलाहाबाद, लखनऊ तक नहीं होती। लेखक की कल्पना सही है कि इस आदेश ने उत्तर प्रदेश के नेताओं, अधिकारियों की नींद उड़ा दी है। 'अफसर, नेता और मजदूर के बच्चे साथ–साथ पढ़ेंगे



तो समाज का बंटवारा घटेगा, शिक्षा का स्तर सुधरेगा और छुटपन में अंग्रेजी थोपे जाने की समस्या भी सुलझेगी। इतनी बीमारियों का एक साथ इलाज एक सपने जैसा लगता है।'(पृष्ठ १८९)

ऐसा ही एक और सपना है परीक्षा में नकल न होना। रवीन्द्र नाथ टैगोर के एक व्याख्यान का सहारा लेते हुए लेखक का मानना सही है कि 'जो नकल का सहारा नहीं भी लेते वे रटंत पर निर्भर हैं। यानी शिक्षा व्यवस्था में पढ़ाई का उद्देश्य समझ का विकास करना तो है ही नहीं। प्रश्न पत्र, नकल, रटंत परीक्षा ऐसे जाल में हम उलझे हैं कि दूर-दूर तक मुक्ति नजर नहीं आ रही। उत्तर भारत में ठीक वसंत के मौसम में ये परीक्षाएं होती हैं। एक उद्योग की तरह रिश्तेदार, स्कूल विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार में नकल करने-कराने की एक से एक नायाब तरकीब आजमाते हैं। बतौर लेखक के शब्दों में – वसंत की विदाई के साथ सब कुछ सामान्य हो जाता है। 'हालांकि सच तो यह है कि वसंत का एहसास वे ही कर पाते हैं जो सुखी सम्पन्न हैं, नौकरियों की निश्चितता में हैं, इस देश का आम नागरिक तो 'न सावन सूखा न भादो हरा' की रफ़्तार में जीता है। यह देश के सामाजिक जीवन की अनोखी विडंबना पर अंगुली रख देना है।

रोहित वेमुला की आत्महत्या के संदर्भ में लिखे 'विश्वविद्यालय की बीहड़' में कई प्रश्नों का जंगल है।



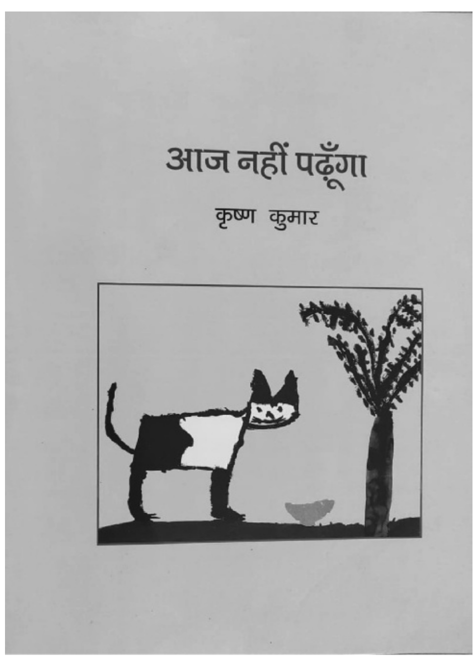
कृष्णकुमार जी भारत के उन अप्रतिम शिक्षाविदों में से एक हैं जो शैक्षिक विषयों पर हिन्दी में सोचते हैं और एक सृजनात्मक गद्य में अपनी बात कहते हैं। वे हिन्दी और अंग्रेजी में समान अधिकार के साथ लिखते हैं। उनका चिंतन अंग्रेजी किताबों में भी प्रकाशित हुआ है और हिन्दी में भी।
वे शिक्षाविद् भी हैं और साहित्यकार भी। उनके पास समर्थ और सृजनात्मक गद्य भी है और प्रामाणिक शैक्षिक अनुभव भी। कृष्णकुंमार जी बालकों के लिए भी लिखते हैं और बाल साहित्य की एक अच्छी पुस्तक महके सारी गली-गली का संपादन भी किया है। यह पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट से छपी है और इसमें चुने हुए बालगीत संकलित है। बालकों के लिए लिखी कहानियों की एक किताब 'आज मैं नहीं पढ़ूंगा' बरसों से चर्चित पुस्तक रही है।

बहुत गंभीर लेख-इलाहाबाद विश्वविद्यालय को लेकर अतीत और आज की पूरी शिक्षा व्यवस्था की जांच करता हुआ। याद होगा पूरे देश में

इस आत्महत्या ने एक खलबली मचा दी थी। इसलिए लेखक के कुछ प्रश्न और प्रासंगिक हैं। 'जो प्राचीन भारत की शिक्षा का गुणगान करते हैं क्या इस बात के कोई प्रमाण हैं कि उन दिनों जाति व्यवस्था और वर्ण की अवधारणा के प्रति विद्यार्थियों में कोई खलबली मचती थी? जाति ही क्यों, स्त्री के सीमाबद्ध जीवन पर सवाल उठाना प्राचीन शिक्षा पद्धति सिखाती हो ऐसे संकेत भी ढूंढना मुश्किल है। बराबरी की चेतना जगाना आधुनिक शिक्षा दर्शन में ही संभव हो सका है। इसके बावजूद इलाहाबाद विश्वविद्यालय जैसे विश्वविद्यालय सवा सौ साल के बाद भी जातिवाद से ग्रस्त हैं, नियुक्तियां जाति के आधार पर होती हैं और शिक्षकों के संगठन भी जाति पर आधारित हैं। अम्बेडकर और लोहिया ने जाति व्यवस्था पर जिस प्रखरता से प्रश्न किये, वैसी प्रखरता आज विश्वविद्यालयों में दुर्लभ है।''
(पृष्ठ १८३)

यहां लेखक से कुछ प्रश्न वापस करने का मन होता है। इलाहाबाद के प्रसंग से ही बात की जाये तो देश के प्रथम प्रधानमंत्री का निवास इलाहाबाद में ही था। कर्म क्षेत्र की शुरुआत भी वहीं से हुई। स्वाभाविक है उसका कुछ असर

तो वहां होना चाहिए था। उनकी ख्याति भी एक लोकतांत्रिक वैज्ञानिक दृष्टि के पुरोधा के रूप में है। समय भी उनको कम नहीं मिला था– १९४७ से वर्ष १९६४ तक। फिर पूरे देश में तो बाद में असर होता, इलाहाबाद में भी क्यों जाति व्यवस्था और मजबूत होती गयी? शायद राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी ही कही जायेगी या कहें सत्ता पर काबिज रहने के कांग्रेसी प्रलोभन जिन्होंने सामाजिक बराबरी के मुद्दों पर चुप रहने में भलाई समझी। और नेहरू के बाद की भी सभी सत्ताओं ने यही किया है। वे नाम भले ही अम्बेडकर, लोहिया का लेते रहे लेकिन जाति को मिटाने में उनके अनुयायियों की मंशा पर शक होता है। रोहित वेमुला के मामले, तथ्यों, उसके पत्र से भी यह फांके साफ दिखायी पड़ती हैं। याद दिला दें, ठीक उन्हीं दिनों तमिलनाडु के एक गांव में तीन छात्राओं ने कुएं में कूद कर सामूहिक आत्महत्या की थी क्योंकि उनके पास फीस चुकाने के पैसे नहीं थे और वे कॉलेज की प्रताड़ना से परेशान थीं। तीनों ही दलित थीं। वेमुला के राजनैतिक शोर में ये आत्महत्याएं अखबारों की सुर्खियां नहीं बनीं। कारण और भी स्पष्ट था यह कॉलेज निजी था। निजी कॉलेजों में शिक्षा के नाम पर हो रहे शोषण का भी भंडाफोड़ होता यहां इन बेचारी छात्राओं का मामला तूल पकड़ता। सब चुप्पी साध गये। क्या ये हमारे समय की कम बड़ी विडंबना है? क्या वेमुला से ज्यादा शोर इन आत्महत्याओं पर नहीं मचना चाहिए था? कृष्ण कुमार जी ने इस लेख में जो प्रश्न उठाये हैं उन सबके सिरे इन छात्राओं की आत्महत्याओं से ज्यादा साफ दिखते हैं। अभी हाल में मेडिकल की 'नीट परीक्षा' में फेल होने पर तमिलनाडु की अनीता की आत्महत्या शिक्षा में भाषा के प्रश्न को उजागर करती है। अफसोस वहां भी वेमुला की तरह शोर नहीं उठा। अनीता एक दलित मेधावी लड़की थी, जिसने तमिलनाडु में बारहवीं कक्षा में १२०० में से ११७६ नम्बर पाये थे। सर्वोच्च अंक। लेकिन नीट में बुरी तरह असफल। कारण बारहवीं में उसका माध्यम तमिल था। अपनी भाषा में शिक्षा पाने वालों को अचानक अंग्रेजी माध्यम में खड़ा करना कितना बड़ा अपराध है यह अनीता जैसी मेधावी छात्रा की आत्महत्या के बावजूद हमारी शिक्षा व्यवस्था समझने को तैयार नहीं है। रोहित वेमुला के प्रसंग में उठा विवाद जरूरी है लेकिन उसकी राजनीति बहुत खतरनाक। यही कारण है कि न इलाहाबाद, हैदराबाद जैसे मशहूर विश्वविद्यालयों से जाति व्यवस्था खत्म हो रही न दूसरे संस्थानों से। मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' इन प्रसंगों में प्रासंगिक हो उठती है। रात के अंधेरे में चलते जुलूस में हर पार्टी के नेता, बुद्धिजीवी, पुलिस, डोमाजी उस्ताद सभी शामिल हैं। जातिवाद के अंधेरे के खिलाफ लड़ने की ताकत अब तो किसी भी दल में नहीं बची।



देश की समस्याओं के कितने सिरे हैं? हजारों, लाखों! या कह सकते हैं समाज सापेक्ष। जितनी समस्याएं समाज–व्यवस्था की, उसी अनुपात में शिक्षा की। असमानता, लिंग भेद, जातिवाद के बाद पाठ्यक्रम, माध्यम, परीक्षा मूल्यांकन से होती हुई शिक्षकों और स्कूल की चारदवारी तक। इसीलिए कृष्ण कुमार जैसे शिक्षाविद् हर लेख में नयी रोशनी डालते हैं। भला हो संचार माध्यमों, ग्लोबलाइजेशन का जिससे दुनिया भर के देश–समाज के अनुभव बहुत पारदर्शिता से साझे किये जा सकते हैं। देखा जाये तो उम्मीद की किरण सारी आलोचना के बाद यही है कि जब दूसरे मुल्क अनुभवों से सीख कर आधुनिक समाज बनाने में शिक्षा के हथियार का ऐसा सदुपयोग कर सकते हैं तो भारत क्यों नहीं।

लेकिन इस पुस्तक में केवल शिक्षा संबंधी ही लेख नहीं हैं, गांव, औरत, प्रकृति, देश और संस्कृति के अलग-अलग खंडों में कुल मिलाकर पचास और भी हैं। हर लेख उतनी ही रोचकता से शुरू। 'जब मैंने पांच वर्ष की एक बच्ची से पूछा कि अच्छी औरत कौन होती है तो उसका जवाब था जो चुपचाप रसोई में खाना बनाती है।' अकेले इस उत्तर की खिड़की से भारतीय समाज में गढ़ी जाती और या रीति के घेरे में लड़की की पहचान की जा सकती है। 'समाज और परिवार मिलकर बच्ची के सोच को रीति-रिवाजों की रस्सियों से बांधना शुरू कर देते हैं। बच्ची की उम्र बढ़ने के साथ-साथ रस्सियों की जकड़ बढ़ती जाती है और औरत का व्यक्तित्व समाज के मान्य सांचे में ढलता जाता है (पृष्ठ १३७)। यह कोई रोमानी चित्रण नहीं है बच्ची के बहाने भारतीय औरत का। गहराई से संवेदनशील मन की करुण आवाज है। लड़की की पूरी स्थिति के दुख को समझने के लिए पाठकों को कृष्ण कुमार की किताब 'चूड़ी बाजार में लड़की' जरूर पढ़नी चाहिए। यह समाज शस्त्रीय अध्ययन का बेजोड़ शोध है। लेखक का निष्कर्ष गौरतलब है- 'लड़कियों के पारिवारिक जीवन और शिक्षा के उद्देश्यों के बीच लगातार तनाव-टकराव बना रहता है। रीति-रिवाजों के दकियानूसी अनुष्ठानों और श्रृंगार-सामग्री की रासायनिक चमक-दमक में जकड़ा लड़कियों का बचपन अपनी प्राकृतिक स्फूर्ति और सुषमा खो बैठता है।' (पृष्ठ १४०)
अफसोस इन सब बेड़ियों को ही अलग-अलग समाज-परंपरा, रीति, धर्म के नाम पर लादे रहते हैं। स्त्री हो या दलित समाज- भारतीय समाज के संदर्भ में कमजोर वर्गों पर और भी ज्यादा।

कृष्ण कुमार इधर के उन लोकप्रिय लेखकों में हैं, जिनके लंबे निबंध और इस पुस्तक में शमिल छोटे लेखों को समान रोचकता से पढ़ा जा सकता है। केवल रोचक ही नहीं, पढ़ते ही थोड़ी देर के लिए आप स्वयं को टटोलने लगते हैं। 'मुश्किल में खाना' लेख में बनावटी हानिकारक रंगों की बात की गयी है। क्या ऐसे लेख पढ़ने के बाद आप उसी उत्साह से रंगीन मिठाई की तरफ बढ़ेंगे? नहीं। वैसे ही आपकी संवेदनशीलता, बच्चे पर उठा हाथ, औरत का घूंघट, बेनेगल का गांव, रेल की खिड़की जैसे लेखों से और पिघलने लगेगी। याद करूं तो ये ज्यादातर लेख जनसत्ता अखबार में छपे हैं। मुद्दा भले ही फौरी घटना के प्रसंग में छुआ गया हो, उसे खींच-खींच कर छोटे लेख की ऐसी पोटली में लेखक बांध देता है कि बिना दिमाग पर वजन डाले आप उसे पूरा पढ़कर ही सांस लेते हैं। बाद में गुनगुनाते भी हैं और शिक्षित भी होते हैं, अच्छे लेखक की यही कसौटी होनी चाहिए। इसीलिए मेरे अनुमान से जनसत्ता में कृष्ण कुमार का कॉलम सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखों में शुमार किया जायेगा। आश्चर्य की बात है जनसत्ता समेत किसी भी अखबार में ऐसे लेख लगभग लुप्त हो गये हैं। हिन्दी पत्रकारिता का तो पतन-काल यह है ही, हिन्दी समाज पर भी टिप्पणी है। शायद इसीलिए कृष्ण कुमार को भूमिका में लिखना पढ़ता है कि 'लेख की आकृति' हमारे समय में अखबारों-पत्रिकाओं ने तय कर दी है। वह कितनी संक्षिप्त होगी यह संपादकों की दृष्टि और कृपा पर निर्भर है। इस पर दुख या अचरज करना व्यर्थ है। इससे कहीं बड़े दुख हमारी भाषा ने झेले हैं। (भूमिका) थोड़ा मतभेद झेले नहीं, आगे हमारी भाषाएं और झेलेंगी। अंग्रेजी ने हिन्दी में इतने लिखे अच्छे लेखों, पुस्तकों के लिए पूरे भारतीय समाज में जगह नहीं छोड़ी। यदि सरकारी नौकरियों, व्यवसायों, सेमिनारों के विमर्श में अपनी भाषाओं की थोड़ी-बहुत भी जगह बची रहती तो इस पुस्तक के लेखों की सीढ़ियां चढ़कर पाठक जरूर कृष्ण कुमार की अन्य पुस्तकें- मेरा देश तेरा देश, विचार का डर, बच्चे की भाषा और अध्यापक, शांति का समर ढूंढ-ढूंढकर पढ़ते। खैर, सारा दोष सत्ता का ही नहीं है, हम जैसे पढ़े-लिखे बैलों का भी है जिनके कंधों पर सत्ता का जुआ रखा है और हम उनकी मर्जी से ही उनके खेत जोत रहे हैं। पैना चाबुक खाते हुए। काश! ऐसी पुस्तकों के दस-बीस संस्करण साल भर में ही बिक पाते। कुछ सत्य तो समाज में पहुंचता कुछ सुन्दरता के साथ। ❑

९६ कला विहार अपार्टमेंट्स,
मयूर विहार, फेज-१, नयी दिल्ली

समिति का एक साल

कार्यक्रम एवं गतिविधियां

जनवरी से दिसम्बर, २०२१ तक

❑

१. किताबों की थड़ी

समिति में किताबों की थड़ी नियमित लगायी जा रही है। इसका उद्देश्य लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना एवं पढ़ने की रुचि जगाना है। हमारी कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा लोग पढ़कर निर्भय हो सकें और मन में उपजे विषाद से उबर सकें। थड़ी पर समिति के प्रकाशनों के अलावा अन्य प्रकाशकों की भी उपयोगी तथा रुचिकर किताबें रखी जा रही हैं। थड़ी पर लोग आने लगे हैं। किताबें उलट-पुलट कर देखते हैं और खरीद कर ले जाते हैं। कई पाठक अपनी रुचि की किताब का नाम बताते हैं तो वह भी उन्हें उपलब्ध करायी जा रही है।



२. घर-घर पोथी घर

बहुत छोटे स्तर पर स्वाध्याय की नींव रखने और निरंतर सीखने वालों का समाज बनाने की दृष्टि से घर-घर पोथी घर खोलना प्रारंभ किया है। समिति द्वारा प्रकाशित नवसाक्षरों के लिए लिखी गयी लगभग ६५ किताबें घर-घर पहुंचायी जा रही हैं। यह अभियान अब गति पकड़ने लगा है। राजस्थान से बाहर भी लोग जुड़ने लगे हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, ओड़िसा एवं महाराष्ट्र में चल रहे सार्वजनिक वाचनालयों ने इस अभियान को अपना लिया है। बड़े प्रकाशकों और कई मित्रों से पुस्तकें मांग कर घर-घर पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। लोग हमें पुस्तकें भेज रहे हैं। हाल ही में पोथी वितरण केन्द्र, ग्रेटर नोएडा की ओर से श्री गिरधर राठी ने ३४५ किताबों की कुल ५८४ प्रतियां इस अभियान के लिए भेंट की हैं। हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाज सेवी श्री अव्यक्त ने यू ट्यूब संबोधन में एक स्थायी संवाद की रचना कर 'हर हर पोथी-घर घर पोथी' का नया नारा दिया है। उन्होंने अपने वक्तव्य में पुस्तक की महत्ता और अनिवार्यता का खुलासा किया है।



३. ग्राम सखी संवाद कार्यक्रम

समिति गांवों में लोक जागरण के लिए महिलाओं के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित कर रही है। पिछले दिनों जयपुर जिले की ग्राम पंचायत भम्भोरिया व इसके चार गांवों में महिलाओं के साथ संवाद



आयोजित किये गये हैं। ये गांव हैं – भम्भोरिया, बगरू खुर्द, झांई व देवलिया। संवाद में उनके जीवन, समाज व गांव से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करते हैं। जैसे कि स्वास्थ्य, बालकों का पालन-पोषण, छुआछूत, रोजगार, पानी, ईंधन, सफाई एवं स्वच्छता आदि। संवाद के जरिये ग्राम सखियों से यह जानने का प्रयास रहता हैं कि गांव में तकलीफें क्यों हैं? गरीबी क्यों है ? भेदभाव क्यों हैं? गांव में भी शहर का स्वभाव आता जा रहा है। शहर गांव तक पहुंच गये हैं। गांव में ज्ञान और प्रेम बचेगा क्या? गांव में जो है, वो कैसे बचे? गांव में कहां ठहराव आ गया है? कहां जड़ता है ? गांव में ऐसी क्या चीजें हैं जो लोगों को पीछे खींच रही हैं? गांव में कितने अंधविश्वास हैं जो आगे बढ़ने से रोकते हैं? समस्या के साथ साक्षरता की बात करते हैं।

४. हर घर स्वावलम्बन

घर-घर में पोथी घर की तरह ही एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है हर घर में स्वावलम्बन। यह कार्यक्रम वर्तमान परिस्थितियों की मांग है। समय का तकाजा है। कोरोना काल में बहुत से ऐसे परिवार हैं जिनके काम-धंधे छूट गये हैं। वे बेरोजगार हो गये हैं। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी है। ऐसे ग्रामीण परिवारों की मदद के लिए महिलाओं का समूह बनाकर उन्हें काम दिया जा रहा है। मास्क सिलाई का काम। कपड़ा, इलास्टिक व डोरा समिति उपलब्ध कराती है और उन्हें सिलाई करने का मेहनताना दिया जाता है। इससे उनकी थोड़ी मदद हुई है। हर महिला अपने परिवार का सहारा हो गयी है। उनमें स्वावलम्बन से एक नया आत्म विश्वास जागा है। इन जरूरतमंद महिलाओं द्वारा बनाये गये मास्क हम लोगों तक पहुंचाने का काम करते हैं।

मास्क सिलने का लिए कपड़ा हम मांग कर लाते हैं। गार्मेंट फैक्ट्री और कपड़ों की दुकानों पर जो टुकड़े बच जाते हैं, वे उनसे मुफ्त प्राप्त करते हैं। इन सभी की मदद से हमें काफी कपड़ा मिल रहा है। मास्क के अलावा छोटी बच्चियों के कुर्ते भी सिलवाये हैं। कुर्ते जरूरतमंदों में बांटे जा रहे हैं। ऐसे भी मदद करने वाले लोग मिले हैं जो मास्क व कुर्तों की सिलाई तक का भुगतान खुद ही कर देते हैं।

५. मिशन ताना-बाना के अंतर्गत घर-घर संत समागम

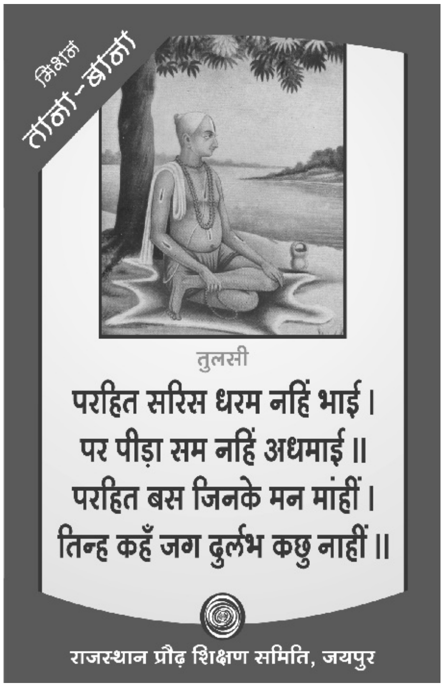
गुरु नानक जयंती के अवसर पर सुश्री अपर्णा मक्कड़ के घर सिरसी रोड, आनंद नगर, जयपुर में संगीत का आयोजन किया गया। इसमें युवा गायक श्री हुल्लास ने प्रस्तुति दी। यहां कई लोगों से संपर्क हुआ। हमारी कई घरों में पहुंच बढ़ी।

५.१ प्रदर्शनी

दादू, रहीम, कबीर, तुलसी, रैदास और नरसी मेहता के प्रेरक दोहों को फ्लेक्स पर छपवाकर उनके २‘x३’ की साइज के फ्रेम बनवाये गये हैं। इसी तरह से नारों के फ्रेम भी तैयार करवाये हैं। इसी तरह गुरु नानक, जपुजी साहिब के वचनों के फ्लेक्स बनवाये गये हैं। इन्हें कहीं भी प्रदर्शित कर इन पर चर्चा की जा सकेगी।

५.२ घर-घर गांधी बापू

महात्मा गांधी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए नारों का सृजन किया गया है। बापू के फोटो के साथ बहुत सुंदर तरीके से इनके फ्लैक्स तैयार किये गये हैं जिन्हें २‘x३’ की साइज में फ्रेम करवा कर प्रदर्शनी तैयार की गयी है।



६. सब के गांधी

श्री नारायाण भाई देसाई द्वारा लिखी गयी मूल गुजराती में १२ किताबों का हिन्दी में अनुवाद कर समिति द्वारा प्रकाशित किया गया है। ये किताबें अत्यंत ही प्रामाणिक हैं। इन बारह किताबों को एक सुंदर डिब्बे में रखा गया है। इसकी बिक्री की जा रही है। देश के कोने-कोने से इसे मंगवाया जा रहा है।

पिछले दिनों राजस्थान सरकार ने ४०० प्रतियां खरीदी हैं। ये प्रतियां प्रदेश के सभी २०० विधायकों को साहित्य, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री बी.डी. कल्ला के पत्र के साथ वितरित की गयी हैं। इसके साथ ही मुख्यमंत्री जी ने अपने पास इसकी प्रतियां रखवायी हैं ताकि वे अपने विशिष्ट मेहमानों को भेंट कर सकें। कला एवं संस्कृति मंत्री, मुख्य सचिव के पास भी भेंट करने को रखवायी गई हैं। जवाहर कला केन्द्र में बिक्री के लिए भी राज्य सरकार द्वारा प्रतियां रखवायी गयी हैं।

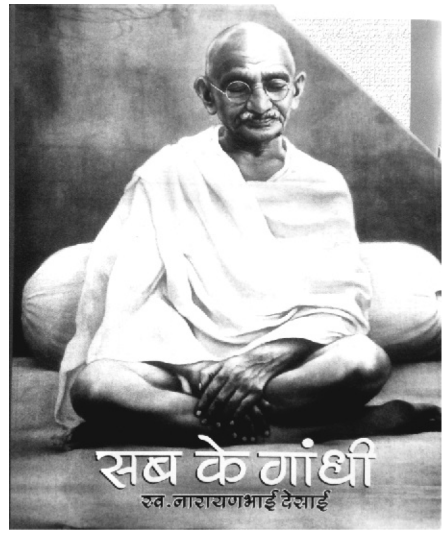
७. काड्र्स का प्रकाशन

प्रदर्शनियों के छोटे रूप में कार्ड भी तैयार किये गये हैं। इन्हें एक सुंदर डिबिया में रखा गया है। इन्हें कहीं भी समूह में चर्चा के लिए साथ रख सकते हैं।

८. वीडियो फिल्म निर्माण

– समिति द्वारा चलाये जा रहे स्वावलम्बन कार्यक्रम की दूरदर्शन ने 'नवाचार' शीर्षक से फिल्म तैयार करवायी। इसमें मास्क बनाने वाली महिलाओं से साक्षात्कार किये गये। इसे दूरदर्शन द्वारा प्रदर्शित किया गया। इस फिल्म को यू ट्यूब पर भी देखा जा सकता है।

– एक वीडियो फिल्म समिति द्वारा तैयार करवायी गयी है जिसमें पूर्व में समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम शिल्पकार कार्यशााला तथा



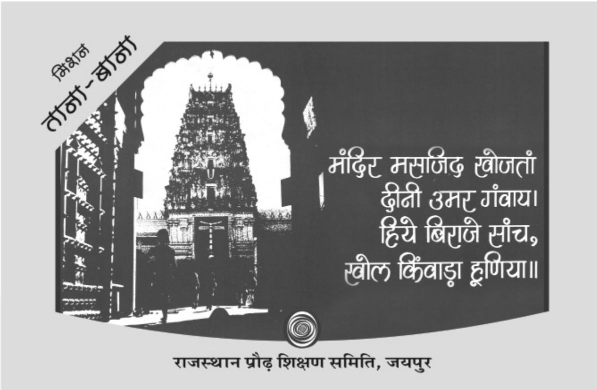
पेंटिंग कार्यशाला के क्रियाकलापों को संजोया गया। इन कार्यशाालाओं का विषय था – महात्मा का संदेश।

– गांव झांई में आयोजित हुए संवाद कार्यक्रम पर एक वीडियो फिल्म तैयार करवायी गयी है। इस फिल्म में संवाद कार्यक्रम की पूरी प्रक्रिया को रिकार्ड किया गया। फिर इसको संशाोधित कर प्रदर्शन किया गया। इसे भी यू ट्यूब पर देखा जा सकता है।

९. समिति में झंडारोहण

हर वर्ष समिति प्रांगण में गणतंत्र दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडारोहण किया जाता है। इस गणतंत्र दिवस २६ जनवरी, २०२१ को सभी को बापू के जंतर





की तस्वीर भेंट की गयी। उद्देश्य था कि घर-घर पहुंचे 'बापू का संदेश'।

१०. घर-घर में गुल्लक

एक छोटा सा प्रयास हमने शुरू किया है: घर-घर गुल्लक। पोकरण (जैसलमेर) से मिट्टी के गुल्लक बनवाकर मंगवाये गये हैं। इन गुल्लकों को कुछ बच्चों और स्थानीय शिल्पशाला के कलाकारों ने रंगों से सजा दिया है। ये गुल्लक हम घरों में रखवा रहे हैं। इस निवेदन के साथ कि इसमें जब भी इच्छा हो कुछ राशि डाल दें। एक साथ भार नहीं पड़ेगा। थोड़ा-थोड़ा करके राशि इन गुल्लकों में डाल दी जाये। हमारा विश्वास है कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। हर घर का अवदान यदि मिल जाये तो शिक्षा यज्ञ में हर घर की आहुति लग जायेगी।



११. व्याख्यान – सेहत में स्वावलम्बन

समिति में २५ मार्च, २०२१ को 'सेहत में स्वावलम्बन' विषय पर वैद्य प्रोफेसर श्री कृष्ण खांडल का व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें साक्षरता कार्यकर्ताओं के अलावा समिति द्वारा संचालित अध्ययन केन्द्र के नौजवानों ने भाग लिया। वैद्यजी के व्याख्यान के पश्चात सेहत संबंधी बहुत ही महत्वपूर्ण सवालों के जवाब उनके द्वारा दिए गए। यह कार्यक्रम सार्थक एवं उद्देश्य परक रहा।



१२. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ४० नौजवान लड़कियों ने भाग लिया। उन्होंने अपने साथ हुई घटनाओं का खुलासा किया। अपनी पीड़ा बयान की। मजबूती से तकलीफों का सामना करने का संकल्प लिया। उनका मानना था कि महिलाएं जब सशक्त होंगी तभी महिला दिवस सार्थक होगा।

१३. समिति के प्रकाशनों को आईएसबीएन (ISBN) मिला

समिति के नये प्रकाशानों को आईएसबीएन (ISBN) नम्बर प्राप्त

होने लगे हैं। 'सब के गांधी' के सैट की १२ किताबों को हमें यह नम्बर मिला है। 'अनौपचारिका' को भी आईएसएसएन (ISSN) नम्बर प्राप्त हुआ है। यह पहली बार हुआ है कि समिति के प्रकाशनों को अब आईएसबीएन नम्बर मिलने लगा है।

१४. कोरोना काल

कोरोना महामारी का पहले दौर के बाद दूसरा दौर अत्यंत ही खतरनाक साबित हुआ है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा प्रोटोकॉल जारी किया गया। समिति में भी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए १९ अप्रेल से ७ जून, २०२१ तक कार्यालय बंद रखा गया। सभी गतिविधियां स्थगित रहीं।

१५. अनौपचारिका प्रकाशन

'अनौपचारिका' का नियमित प्रकाशन चल रहा है। लॉक डाउन के कारण हमने अप्रेल-मई तथा जून-जुलाई, २०२१ के अंक संयुक्तांक निकाले हैं। अब आगे के अंक नियमित चल रहे हैं।

१६. अन्य संस्थाओं के साथ समिति का सहयोग

समिति अन्य संस्थाओं एवं व्यक्तियों व्यक्तियों के साथ मिलकर कई कार्यक्रम आयोजित कर रही है, ये हैं-

१. सुरसंगत, जयपुर
२. अलवर मेवात शिक्षा संस्थान, अलवर
३. इरादा संस्था, जयपुर
४. संधान संस्था, जयपुर
५. आर्म्स अराउंड द चाइल्ड मिड रूट संस्था, अंडर रूट फिल्म्स फण्ड ए मोम संस्था, जयपुर
६. वी बी डिजाइन स्टूडियो, जयपुर श्री विपिन बाकीवाल
७. श्री देवेन्द्र भारद्वाज, जयपुर
८. वैद्य श्रीकृष्ण खांडल, जयपुर
९. नाना-नानी न्यास, जयपुर

१७. समिति कार्यक्रमों पर चर्चा

समिति द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में ९ जून २०२१ को एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मिशन ताना-बाना, स्वास्थ्य (आरोग्य साधनायन), घर-घर में स्वावलम्बन, घर-घर में पोथी घर, घर-घर में संत समागम, गांव गली में तारामंडल, आनन्दशाला पर चर्चा की गयी। यह बैठक श्री विपिन, श्रीमती नीलम अग्रवाल, श्री अमित कल्ला, श्री अभिषेक कुमावत के साथ आयोजित की गयी थी।

१८. साक्षरता निदेशालय के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक

साक्षरता और सतत शिक्षा निदेशालय की प्रतिनिधि सुश्री रजनी भावनानी व श्रीमती दीपिका सैमुअल के साथ १२ जून २०२१ को वर्तमान में चल रहे साक्षरता कार्यक्रम पर जानकारी तथा पूर्व में समिति द्वारा प्रकाशित पोस्टर व नवसाक्षर साहित्य के संबंध में चर्चा हुई।

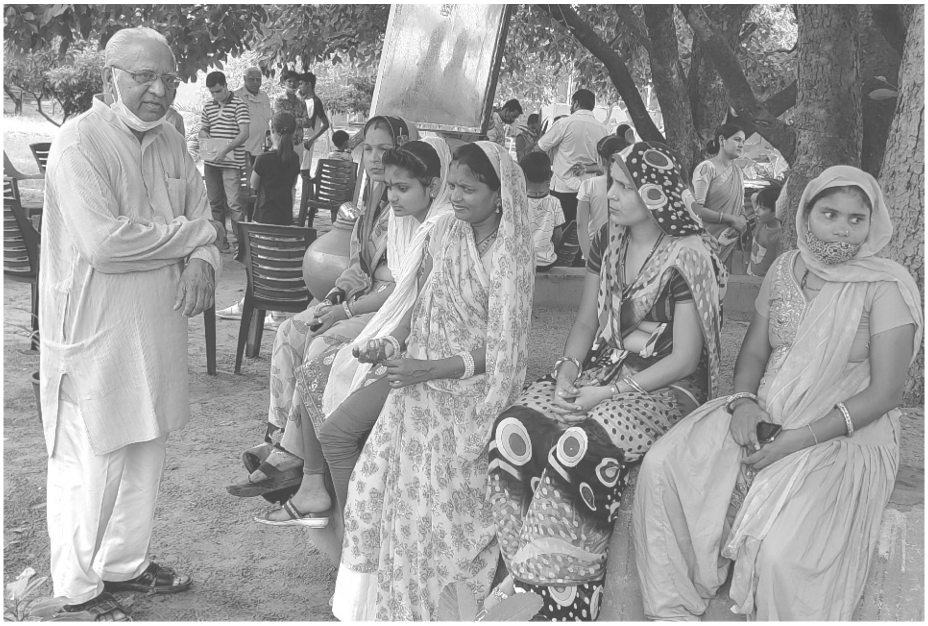
इसी संदर्भ में १५ जुलाई २०२१ को साक्षरता और सतत शिक्षा निदेशालय, राजस्थान की मुख्य लेखाधिकारी श्रीमती कौशल्या सांकृत्य के साथ कार्यक्रम संबंधी बैठक हुई। इसमें कार्यक्रम में समिति द्वारा सहयोग दिये जाने के संबंध में चर्चा हुई।

१९. आनंदशाला के शुभारंभ से पहले अभिभावकों के साथ चर्चा

आनन्दशाला प्रारम्भ करने के संबंध में अभिभावकों के साथ १ सितम्बर २०२१ को बालकों की शिक्षा के संबंध में बातचीत हुई। उन्हें बताया गया कि यहां कोई बस्ता नहीं लाना होगा। कोई किताब नहीं होगी। न कोई परीक्षा होगी। बच्चों पर जबरदस्ती कुछ थोपा नहीं जायेगा। यहां बच्चे साथ रहना सीखेंगे। खेल सीखेंगे। पौधे लगाना सीखेंगे। कहानी सुनायेंगे। कविता, गीत सीखेंगे। चित्रकारी करेंगे। यहां बच्चे आनन्दमय रहेंगे।

२०. आनंदशाला का शुभारंभ

आनन्दशाला का शुभारम्भ ५ सितम्बर २०२१ को किया गया। बालकों का स्वागत किया। उनके तिलक लगाया। माला पहनायी। पहले ही दिन बच्चों ने कठपुतली के माध्यम से कविता सुनने का आनन्द लिया। ऊंट की कठपुतली से ऊंट के बारे में जाना। पत्ते और ढेले की कहानी सुनी। पेड़ पर चढ़े। घास में



खेले। एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर गीत गाये। इस दिन बच्चों ने संगीत भी सीखा। संगीतकार श्री हुल्लास पुरोहित ने सब बच्चों को सरगम सिखाया। बच्चों ने सुर में सा रे गा मा पा धा नि सा गाया।

आनंदशाला के संचालन में श्रीमती नीलम अग्रवाल और श्री मनीष शर्मा का विशेष सहयोग मिल रहा है। श्रीमती नीलम अग्रवाल ने बच्चों के लिए १० छोटी टेबलें उपलब्ध करवायी हैं। समिति के अन्य सभी कार्यकर्ताओं का भी इसमें सहयोग रहता है।

आनन्दशाला नियमित चल रही है। बच्चे गीत गाते हैं। कविता सीखते हैं। कहानी सुनते हैं। पेड़ पर चढ़ते हैं। मिट्टी में घर बनाते हैं। चित्रकारी करते हैं । पौधे लगाते हैं। संगीत सीखते हैं।

२१. नुक के संबंध में बैठक

नुक संचालक श्री अभिजीत सिन्हा के साथ २९ अक्टूबर २०२१ को समिति कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। बैठक में नुक परियोजना के बारे में जाना। श्री अभिजीत ने बताया कि नुक स्वयं करके सीखने का केन्द्र है। यहां शहरी, ग्रामीण, रिफ्यूजी समुदाय से लोग आते हैं। ये अपनी रुचि के प्रोजेक्ट बनाते हैं। नुक नवाचार, कम कीमत की व अपने अनुरूप की जाने वाली शिक्षा का स्थान है। ये बिना अध्यापक के स्कूल हैं। यहां तकनीक और सूचना संसाधन को अपने अनुरूप उपयोग करते हैं। युवा अपने ज्ञान को एक-दूसरे के साथ बांटते हैं। नया रचते हैं। ये युवा धीरे-धीरे स्वरोजगार की तरफ बढ़ते हैं। सब आयु वर्ग के लोग यहां आते हैं। जन सहयोग की नुक के संचालन में मुख्य भागीदारी रहती है।

नुक प्रोजेक्ट पर २५ नवम्बर २०२१ को समिति में वेबीनार मीटिंग की गयी जिसमें नुक संबंधी तैयारी के बारे में बताया गया। शिक्षार्थी कौन हो सकते हैं ? भवन के बारे में जानकारी दी गयी। बजट पर चर्चा की।

२२. गणित स्पंदन कार्यशाला

गणित स्पंदन कार्यशाला का आयोजन ३० अक्टूबर २०२१ को किया गया। गीतांजलि टीम का इसमें मुख्य सहयोग रहा। कार्यशाला में गणित के लगभग ५० अध्यापकों ने भाग लिया। बच्चों के लिए गणित को कैसे रुचिकर बनाया जाए। ये, इसमें क्या-क्या नवाचार किये जा सकते हैं। क्या प्रयास किये जायें कि बच्चे







सामाजिक युवा संगठन संस्थान के कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में १२ संभागियों ने भाग लिया। ये कार्यकर्ता बस्सी के गांवों में साक्षरता शिक्षण का कार्य करेंगे। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रवेशिका द्वारा साक्षरता शिक्षण सिखाने का था। संभागियों ने साक्षरता प्रवेशिका की उपयोगिता व महत्व को समझा। साक्षरता शिक्षण के साथ अन्य गतिविधियों के आयोजन पर भी चर्चा की गयी। केन्द्र पर आयोजित गतिविधियों में सबकी समान भागीदारी रहे, इससे संबंधित सत्र भी आयोजित किये गये। प्रशिक्षण से पूर्व एक दिन के संवाद कार्यक्रम में संभागियों के साथ साक्षरता का अर्थ एवं इसका व्यापक दायरा, साक्षरताकर्मी और उसका समाज तथा कितना रोचक आपका काम संबंधी विषयों पर संवाद आयोजित किया गया था।

प्राथमिक शालाओं में गणित में न पिछड़ें। शुरू में रही कमजोरी आगे तक नहीं भर पाती। यही कारण है कि बालक गणित में पिछड़ता चला जाता है। इस कमजोरी पर प्रारम्भ में ध्यान देने की आवश्यकता है आदि मुद्दों पर कार्यशाला में चर्चा की गयी। कार्यशाला के समापन सत्र में समिति के अध्यक्ष श्री रमेश थानवी ने गणित का जीवन में क्या महत्व है, पर चर्चा की। मिशन ताना-बाना के संबंध में भी बताया।

२३. ग्राम सखी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

– सामाजिक युवा संस्थान बस्सी के कार्यकर्ताओं के साथ ३ दिसम्बर २०२१ को एक दिवसीय साक्षरता संवाद का आयोजन किया गया। संवाद में संस्थान के १५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। अधिकतर कार्यकर्ताओं का यह पहला संवाद था। सभी को समिति के कार्यों के बारे में जानकारी दी गयी। साक्षरता के अर्थ व इसके व्यापक दायरे के संबंध में जानकारी दी गयी। किन लोगों के लिए समाज में काम करना है ? विस्तार से बताया गया।

– १५-१६ दिसम्बर, २०२१ को

२४. आनन्द शाला के बच्चों के लिए कविता मेला

आनन्द शाला में कविता मेला आयोजित हुआ। इसमें लगभग २५ से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। बच्चे ने इस कविता मेले में कविता गायी, गीत गाये और खूब खेले कूदे।

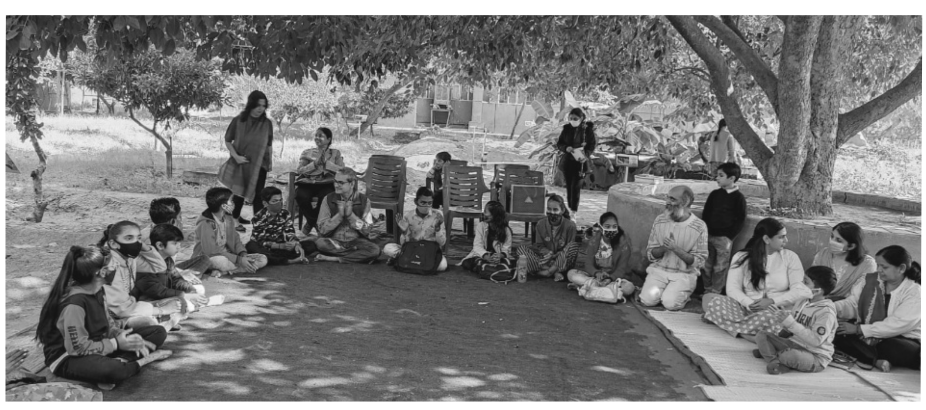
२५. आरोग्य साधनायन बैठक

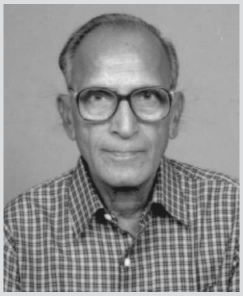
आरोग्य साधनायन की एक बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में १५ से ज्यादा संभागियों ने भाग लिया। आरोग्य साधनायन के आगामी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा हुई।

२६. विनम्र श्रद्धांजलि

कोरोना काल में हमने अपने कई साथियों को खो दिया है। वर्ष २०२० की ७ नवम्बर को समिति के सचिव श्री अरविन्द ओझा अचानक चले गये । हम हतप्रभ थे। उनका जाना सबको हिला गया था। इस आघात से उबरे भी नहीं थे कि २१ नवम्बर, २०२० को समिति के पूर्व सचिव श्री सदाशिव राम शर्मा हमें छोड़ गये और फिर डॉ. श्रीलाल मोहता भी नहीं रहे। यह सब कितना दुखद और असह्य है।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति ऐसे प्रबुद्ध, प्रखर और समर्पित कार्यकर्त्ताओं के साथ से वंचित हो गयी है।
हम सभी श्रद्धावनत हैं। नमन। ❑





आर.सी.भंडारी

❑

श्री आर.सी. भंडारी भौतिकी के प्रोफेसर रहे हैं और उनके द्वारा पढ़ाये गये कई छात्र विज्ञान के क्षेत्र में बड़ा काम कर रहे हैं।
भंडारी साहब वरिष्ठ नागरिक हैं लेकिन वे नौजवानों की तरह सोचते हैं और उसी प्रखरता के साथ अपनी बात कहते भी हैं। वाणी में विनम्र आत्मीयता है और लेखन में प्रखरता है। ओजस्विता है। यहां प्रस्तुत लेख समय के प्रति और समय की अनुकूलता के प्रति मुहूर्त जैसे विषय पर उनका विवेचन करती है। एक अलग दृष्टिकोण है। विश्वास है पाठक अवश्य इसे रोचक पायेंगे।❑ सं.

मुहूर्त : एक दृष्टिकोण

❑

प्राचीन काल से परम्परा चली आ रही है कि किसी भी कार्य को करने से पहले किसी शुभ दिन और समय का चयन कर लेना चाहिए। ऐसे समय को शुभ मुहूर्त या मुहूर्त कहा गया है।

कार्य में निर्विघ्नता से सफलता मिल जाती है तो संतोष एवं आनन्द महसूस होता है अन्यथा मुहूर्त की गणना को सही नहीं बताया जाता और अपने भाग्य को दोष देने लगते हैं। कोई-कोई तो असफलता की स्थिति को ईश्वर-इच्छा मान कर संतोष कर लेते हैं। इस प्रकार की सफलता-विफलता की मनोदशा सामान्य व्यक्तियों के अलावा शिक्षित विद्वान लोगों में भी देखने को मिल जाती है। मुहूर्त के अनुसार हुए विवाहों के संबंध विच्छेद (तलाक) होते देखे गये हैं। भवनों के निर्माण कार्य मुहूर्त में ही प्रारंभ तो हो जाता है परन्तु किन्हीं अज्ञात कारणों से भवन या तो पूरे नहीं हो पाते या फिर पूरे हो जाने पर किसी में कोई खुशी खुशी से रह ही नहीं पाते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि पुण्यार्जन हेतु मुहूर्त से की जाने वाली तीर्थ स्थानों की यात्राएं दुर्भाग्यवश किसी दुर्घटना के कारण अधूरी रह जाती हैं और कोई-कोई की तो दुर्घटना में मृत्यु भी हो जाती है। मनुष्य के जीवन में मुहूर्त क्या सचमुच महत्व रखता है, इसी की संक्षिप्त विवेचना यहां की गयी है।

यह तो सर्वविदित ही है कि व्यक्ति के जीवन का प्रारंभ बिना मुहूर्त ही हो जाता है। इसमें अपवाद हो सकता है क्योंकि आजकल के विज्ञान और टेक्नोलॉजी के युग में प्रसव को किसी निश्चित मुहूर्त तक टाला जा सकता है। और मनुष्य का अंत (मृत्यु) भी किसी मुहूर्त का इंतजार नहीं करता है। मनुष्य के जीवन के प्रारंभ और अंत के लिए मुहूर्त का कोई महत्व ही नहीं रहता तो फिर इन दोनों (प्रारंभ और अंत) के बीच की अवधि (जीवन काल) में किसी भी कार्य या यात्रा को शुरू करने के लिए मुहूर्त को आवश्यक क्यों माना जाना चाहिए। वास्तविकता में मनुष्य के जीवन में समय प्रबन्धन (टाइम मैनेजमेंट) और समय बद्धता (पंचुएलिटी) का विशेष रूप से खास स्थान सदैव बना रहना चाहिए। और व्यक्ति को ये आगाह भी करते रहते हैं कि किसी कार्य को शुरू करने से पहले परिस्थितियों का आकलन कर उनकी अनुकूलता, आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था तथा सम्पूर्ण कार्य की सही-सही योजना आदि की निश्चितता होने पर कार्य शुरु करने का समय ही शुभ समय (मुहूर्त) रहता है और कार्य के निर्विघ्न पूरा होने में किसी तरह की रुकावट आने की संभावना कम रहती है। दूसरी

तरफ इन सारी बातों के अभाव में केवल शुभ मुहूर्त के अनुसार ही कार्य की शुरुआत की जाती है तो उसके संपादन में शंकाएं सदैव बनी रहती हैं क्योंकि रुकावट या बाधाएं आने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। इसलिए मनुष्य को जीवन में मुहूर्त के बजाय व्यावहारिकता पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

मुहूर्त शब्द संस्कृत के मुहूरत से लिया गया है जिसका शब्दार्थ है समय की श्रेणी क्रम में बंटवारा यानी समय का विभाजन। हिन्दू धार्मिक शास्त्रों में मुहूर्त को समय की इकाई माना गया है। दिन और रात के २४ घंटे में कुल मुहूर्त ३० माने गए हैं। मुहूर्त की गणना ज्योतिष शास्त्र आधारित होती है जहां चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। चूंकि चन्द्रमा को पृथ्वी का एक चक्कर पूरा करने में ३० दिन लगते हैं (चन्द्रमा की ३० कलाएं होती हैं) संभवत: इसी कारण से, हिन्दू शास्त्रों में, मुहूर्तों की संख्या ३० मानी गयी होगी। इस प्रकार एक मुहूर्त ४८ मिनट का होता है यानी प्रत्येक ४८ मिनट में मुहूर्त बदल जाता है। इन ३० मुहूर्तों में शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के मुहूर्त बताये गये हैं। चूंकि मुहूर्त की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है और ऋषि-मुनियों, आचार्यों, विद्वानों, जैन संतों आदि ने मुहूर्त की विस्तार में व्याख्या की और भारी मात्रा में साहित्य उपलब्ध कराया है। मुहूर्त की गणना जटिल बतायी गयी जिसकी सही-सही जानकारी कोई ज्योतिष शास्त्र का विद्वान विशेषज्ञ ही कर सकता है। आजकल ऐसे विशेषज्ञ विरले ही मिलते हैं।

आजकल के तथाकथित ज्योतिषियों के लिए मुहूर्त आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन हो गया है। ऐसे लोग सामान्यतया कमजोर मनोबल और अंधविश्वासी व्यक्तियों को धन की कामधेनु मान लेते हैं। जब भी कोई ऐसे ज्योतिषी के पास अपने किसी कार्य के लिए शुभ मुहूर्त पूछने आता है तो फलित ज्योतिष से गणना कर मुहूर्त बता दिया करते हैं और दक्षिणा-पारिश्रमिक के रूप में भारी रकम ऐंठ लेते हैं यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य को किसी खास समय पर ही करना चाहे और ज्योतिषी के अनुसार वह समय शुभ मुहूर्त की गणना में नहीं आता है तो व्यक्ति हताश-निराश हो जाता है और पूछने लगता है कि क्या कोई तरीका नहीं है जिससे कार्य के लिए समय शुभ हो जाये। पंडितजी को ऐसे ही प्रश्न की उम्मीद रहती है और सुनकर कहने लगते हैं कि घबराने की कोई बात नहीं है। भगवान ने जब कांटों भरे रास्तों को सुगम्य बनाना बताया है तो अशुभ मुहूर्त को शुभ मुहूर्त में बदलने के तरीके या उपाय भी उपलब्ध कराये हैं। ज्योतिषी अपने पंचांग-पत्रिका आदि को देखकर तथा गुनगुनाते हुए कुछ गणना कर आसानी से हो सकने वाला कोई उपाय सुझा देते हैं। पूछने वाला व्यक्ति संतुष्ट होकर ज्योतिषी को खासी रकम दक्षिणा में दे देता है। कोई-कोई पंडित, ज्योतिषी आदि तो इतने वाक्पटु होते हैं कि मुहूर्तों के शुभ-अशुभ प्रभावों की चर्चा कर, मुहूर्त पूछने वालों को बड़ी सरलता से प्रभावित कर देते हैं।

वर्तमान युग डिजिटलाइजेशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का हो गया है और आज के तथाकथित ज्योतिषियों ने भी कंप्यूटर का भरपूर उपयोग करना शुरू कर दिया है जिसमें अन्य सूचनाओं के अलावा मुहूर्त संबंधी प्रोग्राम (सॉफ्टवेयर) होता है और इसी कारण से ये बेजान ज्योतिषी (कंप्यूटर) बड़ी प्रसिद्धि पाने लगे हैं। जब भी कोई व्यक्ति ज्योतिषी के पास अपने किसी कार्य के लिए मुहूर्त पूछने के लिए आता है तो वह उस व्यक्ति से कार्य संबंधी आवश्यक सूचनाएं जानकर कंप्यूटर में डाल देता है और बेजान ज्योतिषी शीघ्र ही मुहूर्त बता देता है और इस कार्य की भारी फीस वसूली जाती है। अतएव यह कहा जा सकता है कि डिजिटल संस्कृति ने ज्योतिषियों को कंप्यूटर के रूप में एक अनमोल तोहफा दे दिया है।

प्रकृति ने समय के रूप में मनुष्य को एक बेशकीमती उपहार दिया है जो स्वयं न कभी शुभ होता है और न कभी अशुभ। मनुष्य की सोच ही उसे मानने को मजबूत करती है कि किसी भी कार्य की शुरुआत यदि शुभ समय पर की जाये तो उसके सफल या पूरा होने में कोई रुकावट-या बाधा नहीं होगी। परन्तु

हर व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि समय और जिन्दगी को (जीवन) में गहरा संबंध होता है क्योंकि मनुष्य की जिन्दगी संवारने तथा सही रास्ते पर सुचारु रूप से चलाने में समय की सदैव ही अहम और महत्वपूर्ण भूमिका रहती है और जहां समय प्रबन्धन एक आवश्यक घटक होता है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति (स्व.) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपने भाषणों में कहा करते थे कि प्रकृति ने मनुष्य को दो महान शिक्षक दिये हैं। एक जिन्दगी (लाइफ) और दूसरा समय (टाइम)। जिन्दगी सिखाती है कि समय का उचित भरपूर उपयोग करना चाहिए तथा समय मनुष्य को जीवन की विशेषताओं और उसकी महत्ता से रूबरू कराता है।

इंसान ने अपनी सुविधा के लिए सतत प्रवाह करने वाले समय (काल) के तीन मुख्य भाग कर दिये। भूत (अतीत) काल, वर्तमान और भविष्य काल। समय के इन तीन भागों में अतीत जो समय बीत गया और भविष्य जिसकी संभावना बनी रहती है, ये दोनों ही मनुष्य की पकड़ से परे रहते हैं। केवल वर्तमान ही सदैव उपलब्ध रहता है। इसलिए वर्तमान समय की उपेक्षा न करते हुए उसके हर पल का उचित उपयोग करना चाहिए। एक दृढ़ मनोबल और घोर आत्म विश्वासी व्यक्ति के लिए किसी भी कार्य के संपादन में वर्तमान का हर पल, प्रत्येक क्षण शुभ ही रहता है और जैसे ही परिस्थितियां अनुकूल हो जाती हैं, वह कार्य आरंभ कर देता है। इसके विपरीत मुहूर्त में विश्वास करने वाले व्यक्ति को शुभ मुहूर्त में शुरू किये गये काम में सफलता नहीं मिल पाती क्योंकि कार्य के प्रारंभ के लिए परिस्थितयों का सही-सही आकलन नहीं किया गया और वे अनुकूल नहीं रही थीं। निम्न तीन उदाहरणों से ये बात स्पष्ट हो जाती हैं। रामायण में राम के राजतिलक के लिए प्रकांड पंडित एवं महान ज्ञानी गुरु वशिष्ठ ने गणना कर शुभ मुहूर्त बताया था, परन्तु परिस्थिति अनुकूल नहीं होने से राम को वनवास जाना पड़ा और मुहूर्त महत्वहीन हो गया। महाभारत में धनुर्विद्या की शिक्षा देने के दौरान गुरु द्रोणाचार्य ने अर्जुन से दूर पेड़ पर रखी चिड़िया के बारे में बार-बार पूछा कि क्या दिखलायी पड़ता है और जैसे ही अर्जुन ने कहा कि गुरुवर मुझे तो अब केवल चिड़िया की आंख ही दिखायी पड़ रही है। यह सुनते ही द्रोणाचार्य ने तुरन्त कहा, चलाओ बाण और बाण ठीक चिड़िया की आंख में जा लगा। द्रोणाचार्य के अनुसार बाण चलाने के कार्य के जैसे ही परिस्थिति अनुकूल हुई कार्य संपन्न हो गया। इस प्रकार द्रोणाचार्य ने परिस्थिति को महत्व दिया। स्वर्गीय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब भारत के राष्ट्रपति चुने गये तो (उनसे) पूछा गया कि राष्ट्रपति भवन में कब और किस समय निवास के लिए आना चाहेंगे, तो जवाब में डॉ. कलाम ने कहा कि ईश्वर के बनाये गये सभी दिन और दिन का हर क्षण (पल) अच्छा ही होता है। राष्ट्रपति भवन तैयार हो जाने पर बता देना, चला जाऊंगा। डॉ. कलाम दृढ़ आत्मबल और प्रबल आत्म विश्वास के धनी व्यक्ति थे जिनके जैसे व्यक्तियों के लिए जीवन में मुहूर्त का कभी भी कोई स्थान नहीं रहता।

मुहूर्त (मुहरत) वैदिक काल की देन है। आज की भाग-म-भाग की जिन्दगी में व्यक्ति के लिए समय का हर पल अत्यन्त ही महत्वपूर्ण होने लगा है। आज वैज्ञानिकों के लिए एक सेंकड के हजारवें हिस्से से भी नीचे तक के पल का मापन संभव हो गया है। जब समय के इतने छोटे पल का बड़ा भारी महत्व होने लगा है, तब मुहूर्त को महत्व देना कितना न्यायसंगत हो सकता है? इसलिए, यदि मनुष्य प्रतिदिन यह संकल्प कर ले कि दिन के हर क्षण का उचित उपयोग करेगा तो ऐसी सकारात्मक धारणा मुहूर्त की पर्यायवाचिता हो सकती है। तब मनुष्य के जीवन में मुहूर्त केवल समय प्रबन्धन और समय प्रतिबद्धता का संकेतक मात्र रह जायेगा, अन्यथा परम्परागत रूढ़िवादिता का सहारा लेकर मुहूर्त में विश्वास करते रहना सरासर अंधविश्वास ही होगा।❑

९३, जय जवान कॉलोनी,
स्कीम प्रथम
जयपुर-३०२०१८

अनुपम मिश्र की याद में...



रवीश कुमार

❑

रवीश कुमार एन.डी.टीवी पर प्राइम टाईम प्रस्तुत करने वाले प्रखर टेलिकास्टर हैं। रवीश अपनी प्रखरता और तेजस्विता के कारण विश्वविख्यात हो गये हैं और इनकी तथ्यात्मक प्रस्तुति और सात्याग्रही नजरिये के कारण ही इनको मैगासेसे पुरस्कार से भी नवाजा गया है। अनुपम की किताब पर उनकी लिखी यह समीक्षात्मक टिप्पणी पुस्तक पढ़ने को पाठकों को लालायित करेगी।

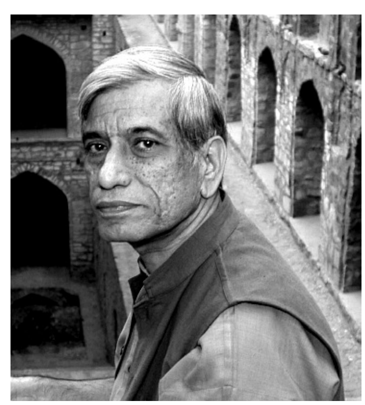
❑ सं.



अनुपम मिश्र को याद करने का एक तरीका यह हो सकता है कि उनका लिखा पढ़ा जाये। आज मैंने ‘विचार का कपड़ा’ नाम की इस किताब से उनके तीन लेखों को अध्ययन किया। पहला लेख था, गांधी समाधि या सैनिक समाधि। दूसरा लेख था गलती का दूसरा मौका नहीं मिलेगा। दोनों लेख दिनमान में छपे थे। दूसरे लेख में उत्तराखंड में सत्तर के दशक के किसी साल में एक के बाद कई बस दुर्घटनाओं को लेकर परिवहन व्यवस्था पर उनकी रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट को पढ़ते हुए हालात पर हंसी भी आयी और रोना भी लेकिन अनुपम मिश्र दोनों भावों को मूल समस्या की पड़ताल पर हावी होने नहीं देते हैं। अपने पाठक की नजर को व्यवस्था की खामियों से भटकने नहीं देते हैं। हर नये पत्रकार को यह रिपोर्ट पढ़नी चाहिए और कक्षा में यह किताब पढ़ायी जानी चाहिए।

तीसरा लेख है लोक शक्ति बनाम राज्य शक्ति। इस लेख में बांग्लादेश के बनने पर अनुपम मिश्र बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम को महान बताते हुए आखिर में एक प्रश्न छोड़ देते हैं कि लोक शक्ति को राज्य शक्ति पर क्यों निर्भर रहना पड़ता है ? बल्कि उनका यह सवाल संघर्ष और बलिदान की तारीफ के साथ-साथ चलता है और वे राज्य शक्तियों के बीच के खेल को शानदार तरीके से उजागर करते रहते हैं।

अनुपम मिश्र आने और जाने की तारीख पर याद किये जाने की परंपरा से असहज थे। उन्हें याद करने का बेहतर तरीका है उनकी लिखी बातों को पढ़ना। बड़ी-बड़ी बातें सरलता के साथ मौजूद हैं। उन्हें पढ़ते हुए एक आवाज गूंजती रहती है। मैं अनुपम बोल रहा हूं। रजा फाउंडेशन और राजकमल प्रकाशन का प्रकाशन है। ११९५ रुपये की किताब है। कमाल का कवर है और नाम भी। विचार का कपड़ा। ❑





गांधी सबद निरंतर

मौजूदा समय की जरूरी किताब

❑

राजेन्द्र बोड़ा

❑

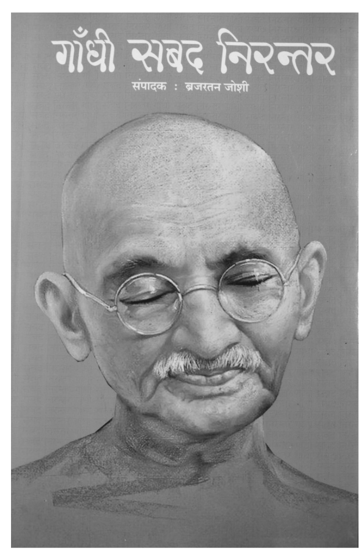
राजस्थान साहित्य अकादमी के इतिहास में पहली बार गांधी पर प्रामाणिक अकादमिक सामग्री का प्रकाशन हुआ है। आज जब सोशल और मुख्यधारा मीडिया में सत्य, अहिंसा और प्रेम की अलख जगाने वाले महात्मा गांधी के विरुद्ध एक व्यवस्थित और सोची-समझी साजिश के तहत झूठे प्रचार का अभियान चल रहा हो तथा उस महान व्यक्ति की छाती में पिस्तौल से तीन गोलियां दाग कर हत्या कर देने वाले की महिमामंडन की कुत्सित चेष्टाएं हो रही हों तब अकादमी पुस्तकमाला शृंखला में प्रकाशित 'गांधी सबद निरंतर' पुस्तक मौजूदा समय की एक जरूरी किताब बन जाती है। यह पुस्तक कुल २१ लेखों का संकलन है जिनमें गांधी दृष्टि की व्याख्याएं ही नहीं मिलतीं, बल्कि उन पर उठ रहे प्रश्नों के द्वन्द्व रहित उत्तर भी तार्किक, सुचिन्तित और सुरुचिपूर्ण ढंग से मिलते हैं।

पुस्तक की भूमिका में संकलन के सुधी संपादक ब्रजरतन जोशी उचित ही कहते हैं कि गांधी आधुनिकता के पूर्वज और वर्तमान के अभिभावक हैं। वे निजी संरक्षकीय मुद्रा में नहीं हैं, वे प्रयोग पर अटल रहने वाले ऋषि हैं। आधुनिक सभ्यता के नाड़ी वैद्य हैं।

संकलन के लेखकों में कुछ प्रमुख नाम हैं रामचन्द्र गुहा, पुरुषोत्तम अग्रवाल, नन्द किशोर आचार्य, कुमार प्रशांत, उदयन वाजपेयी तथा मंगलेश डबराल। संकलित लेखों में गांधी विचार की वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया को गति देने की ईमानदार कोशिश की गयी है तथा गांधी विचार या दृष्टि के विविध आयामों की विश्लेषणात्मक व्याख्याएं की गयी हैं। किसी ने गांधी के संघर्ष को समता की लड़ाई बताया है तो किसी को गांधी भौतिक और आभासी के बीच अलग खड़े नजर आते हैं। सभी लेखकों ने अपने-अपने नज़रिये से गांधी को प्रस्तुत करने की कोशिश की है जिससे गांधी के विचारों के विराट आयाम ही नहीं समझ में आते अपितु आज के झंझावाती समय में उनकी प्रासंगिकता भी प्रकट होती है।

पुरुषोत्तम अग्रवाल कहते हैं गांधी का हत्यारा जानता था कि इस आदमी का नैतिक प्रभाव अकाट्य है। गांधी जी को वैचारिक और नैतिक रूप से परास्त करना उसके लिए असंभव था। गांधी जी की हत्या गोडसे के फासिस्ट प्रोजेक्ट की नैतिक और बौद्धिक दरिद्रता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

गांधी की कुटिल आलोचना करने वालों को जवाब देते हुए से कुमार प्रशांत कहते हैं-महात्मा गांधी ने हमारे जीवन के और हमारे समाज के प्रायः हर मामले में लगातार हस्तक्षेप किये; और इस तरह किये कि अब वे मिटाये नहीं मिट रहे हैं। वे यह भी कहते हैं कि गांधी के पास



पहुंचना हो तो वह उनके साथ चले बिना संभव नहीं है। गांधी की दिशा में छोटा-बड़ा सफर उन्हें ही नहीं, हमें भी ज़िंदा रख सकेगा। राजीव रंजन गिरि अपने लेख में २ मार्च, १९४० के 'हरिजन' से गांधी को ही उद्धृत करते हैं-कोई यह नहीं कहे कि वह गांधी का अनुगामी है। अपना अनुगमन मैं स्वयं करूं, यही काफी है आप मेरे अनुगामी नहीं हैं, बल्कि सहपाठी हैं, सहयात्री हैं, सहखोजी हैं और सहकर्मी हैं।

महात्मा गांधी को एक विचार पुरुष, एक प्रज्ञा पुरुष बताते हुए अंबिकादत्त शर्मा कहते हैं कि गांधी ने भारत की स्वतंत्रता को भारत की अपने स्व में प्रतिष्ठा के रूप में देखा जिसमें ग्राम स्वराज कोई बैलगाड़ी के युग में लौटना नहीं था बल्कि वह आत्मपूरित ग्राम स्वराज था।

नन्दकिशोर आचार्य की धारणा है कि राज्य संकेंद्रित और संगठित रूप में हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है। वे अपनी धारणा को गांधी पर निरूपित करते हुए उन्हें अराज्यवादी (anarchist) घोषित करते हैं तो पवनकुमार गुप्त मानते हैं कि महात्मा गांधी आम आदमी में आत्मविश्वास पैदा करके उसे निर्भीक और स्वतंत्र बनाना चाहते थे। उनसे पहले इस देश में कोई ऐसा बड़ा नेता नहीं हुआ जिसे भारत के साधारण व्यक्ति के स्वभाव और यहां की लोक परंपराओं की इतनी गहरी समझ हो।

संकलित लेखों में राधा वल्लभ त्रिपाठी का लंबा आलेख संस्कृत में गांधीपरक साहित्य और बाबू राज के नायर का विस्तृत आलेख दक्षिण भारतीय भाषा-साहित्य में गांधी पुस्तक को समग्रता ही नहीं देते, बल्कि भारत के कोने-कोने तक महात्मा गांधी और उनके जीवन दर्शन की पहुंच का पता भी देते हैं।

अधिकतर लेखकों का नज़रिया अकादमिक है जो विश्वविद्यालयों में गांधी शिक्षण विषय की परीक्षाएं लेने-देने के काम भी आ सकता है।❑

विराम, ६०/१७, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर



कवर दो से आगे...

खरोश के साथ पनप गयी है। **निर्गुण्डी** भी पनप गयी है और **गूगल** जिसका पौधा हमने कभी देखा नहीं था वह भी फूट पड़ा है। **चिरमी** की बेल भी है और गुड़मार की बेल भी है। **दमाबेल** भी है और **हड्डी जोड़** की बेल भी है। **सुदर्शन** के पौधे भी हैं और **पुनर्नवा** के पौधे भी है। **ग्वारपाठा** अथवा **एलोवेरा** के पौधे भी हैं। **अरीठे** का पेड़ भी है और **पारस पीपल** का पेड़ भी है। इस **सेहजन, हारसिंगार(पारिजात), मीठा नीम, नीमगिलोय, सदाबहार, जवाकुसुम** आदि सैकड़ों वनस्पितियां समिति के परिसर में अपने नामों के साथ लहलहा रही है।

इस उद्यान को विकसित करने में हमें वन विभाग से सेवा निवृत्त वरिष्ठ अधिकारी **श्री देवेन्द्र भारद्वाज** का सहयोग भी मिला है और राष्ट्रीय आयुर्वेदिक संस्थान से सेवा निवृत्त आचार्य **श्री श्रीकृष्ण खांडल** का सक्रिय, पूर्णतया स्वैच्छिक और मानद सहयोग मिला है। वैद्य जी **श्री श्रीकृष्ण खांडल** ने तो समिति को एक लाख रुपये का आर्थिक सहयोग भी दिया है और **देवेन्द्र भारद्वाज जी** ने दो सौ से अधिक पौधे स्वयं लाकर लगवाये हैं और उन्होंने समिति से कोई पैसा नहीं लिया और किसी भी किसी चीज का बिल नहीं दिया। यह वही परिसर है जो पिछले तीस बरसों से उजाड़ पड़ा था और यहां सांप और गोहरे अक्सर निकल आया करते थे। उनकी चिंता किये बिना हमारे साथी **श्री धर्मराज** ने बहुत परिश्रम करके इस उजाड़ को वनौषधि उद्यान में परिवर्तित करने में अपने श्रम का हमें सहयोग दिया है।

हम अब स्कूलों से बालकों को आमंत्रित करेंगे और वे सशुल्क इस उद्यान को देखकर अपने किताबी ज्ञान में इजाफा कर सकेंगे।

श्रीमती नीलम अग्रवाल और **श्री विपिन बाकीवाल** जो दोनों आर्किटेक्ट हैं इस उद्यान में एक पक्का **वॉक वे** बनवाने की बात पर विचार कर रहे हैं। सुझाव उनका ही था और क्रियान्वित भी वही करेंगे। यह लोक-सहयोग समिति को लोक-पोषित बना रहा है। ❑

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एंड कम्पनी, जयपुर में मुद्रित तथा
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। का.संपादक - श्रीमती प्रेम गुप्ता









